NATIONAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

छत्तीसगढ़ शासन

State Health Resource Centre Chhattisgarh

मितानिन पाती

मितानिन की बातें-मितानिन की ख़बरें

अंक-14 परिकल्पना एवं निर्माण : राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़ मई-2020

पंचायत प्रतिनिधियों का स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पेजयल पर प्रशिक्षण

वि.ख.-गुंडरदेही, जिला-बालोद

वि.ख.-बिलाईगढ़, जिला-बलौदाबाजार

वि.ख.-बाड्रफनगर, जिला-बलरामपुर

वि.ख.-बेमेतरा, जिला-बेरला

वि.ख.-पंडरिया, जिला-कबीरधाम

वि.ख.-कुरूद, जिला-धमतरी

जिला-दंतेवाड़ा

वि.ख.-छुरिया, जिला-राजनांदगांव

वि.ख.-देवभोग, जिला-गरियाबंद

वि.ख.-कांसाबेल, जिला-जशपुर

वि.ख.-भानुप्रतापुर, जिला-कांकेर

जिला-कोरबा

वि.ख.-पुसौर, जिला-रायगढ़

जिला-नारायणपुर

जिला-महासमुंद

स्वास्थ्य की बात मितानिन के साथ

दस्त से बेहोश महिला को मितानिन ने अस्पताल पहुंचाया

ग्राम-बरगड़ा, विकासखंड-साजा, जिला-बेमेतरा

गांव की एक महिला को चार दिन से दस्त हो रहा था। परिवार वाले महिला का निजी डॉक्टर से इलाज करवा रहे थे। गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में मितानिन जब महिला को बुलाने गयी तो उसने पाया कि महिला बेहोश पड़ी थी। मितानिन ने घर वालों से पूछा तो उन्होंने मितानिन को बताया की चार दिन से दस्त हो रहा है और दवा खा रही है। मितानिन ने महिला के होश में आने के बाद उन्हें नमक शक्कर का घोल बनाकर पिलायी और उसके बाद उसे घर वालों के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र साजा लेकर गयी। महिला को अस्पताल में भर्ती कर इलाज किया गया। मितानिन के सही समय पर किए गए प्रयास से महिला अभी स्वस्थ है।

➡ **सुखबती साहू-मितानिन प्रशिक्षक**

बिना जांच के दवा देने वाले झोलाछाप डॉक्टर को मितानिन ने भगाया

ग्राम-मानपुर, विकासखंड-मानपुर, जिला-राजनांदगांव

पारा में एक 8 साल के बच्चे को तेज बुखार हो रहा था। बच्चे के घर वालों ने झोलाछाप डॉक्टर को बुलाया। पारा की मितानिन बिरझा सलामे ने जब बच्चे के घर झोलाछाप डॉक्टर को जाते देखा तो वह भी बच्चे के घर गयी। झोलाछाप डॉक्टर बच्चे को बिना जांच किए इंजेक्शन लगा रहा था। मितानिन ने झोलाछाप डॉक्टर को इंजेक्शन लगाने से रोकी और उनसे बोली कि बिना जांच किए कैसे इंजेक्शन लगा रहे हैं और उसे वहां से भगा दिया। मितानिन ने अपने थैले से आर.डी. किट निकाली और बच्चे के खून की जांच की। जांच में बच्चे को पी.एफ. मलेरिया निकला। मितानिन ने बच्चे को ए.सी.टी. की दवा दी और तीन दिन तक ए.सी.टी. का पूरा डोज खिलाई। बच्चे का बुखार ठीक हो गया। इस घटना के बाद मितानिन ने पारा में बैठक लेकर लोगों को समझाया कि झोलाछाप डॉक्टर बिना जांच के इलाज करता है और पैसे भी लेता है। मितानिन के पास दवापेटी है जिससे आप लोगों को मुफ्त में दवा मिल सकती है तो आप लोग पैसे क्यों खर्च करते हो। उस घटना के बाद से पारा के लोग झोलाछाप डॉक्टर को नहीं बुलाते हैं और मितानिन से ही दवा लेते हैं।

➡ **अश्वनी मानिकपुरी-मितानिन प्रशिक्षक, बिरझा सलामे-मितानिन**

खतरे के लक्षण वाली गर्भवती को मितानिन ने बचाया

ग्राम-कुम्हालोरी, पंचायत-खैरा, विकासखंड-डौंडी लोहारा, जिला-बालोद

गांव के बीच पारा में एक 25 वर्षीय गर्भवती महिला रहती है। पारा की मितानिन के सहयोग से इस महिला की पूरी जांच हो रही थी। आखरी जांच के लिए जब यह महिला ए.एन.एम. के पास गयी तो महिला का बी.पी. बढ़ा था। गर्भवती घर वापस आ गयी और रात भर सो नहीं पाई, बार–बार उठकर बैठ जाती थी और बड़बड़ा रही थी। सुबह 8 बजे जब सोकर उठी तो तब भी वह बड़बड़ा रही थी और उसे पानी–पानी उल्टी हो रही थी और मुंह से झाग भी निकल रहा था। गर्भवती के घर वाले उसे जादू टोना है बोलकर उसका झाड़–फुक करवा रहे थे। मितानिन घर वालों को बार–बार समझाती रही की इसे अस्पताल लेकर चलो पर कोई नहीं सुन रहा था। दोपहर तक गर्भवती कांपने लग गयी और आंख भी नहीं खोल रही थीं इसी बीच उसका पति घर आया तो मितानिन ने उसे अस्पताल ले चलने के लिए कहा परन्तु उसने भी यही कह दिया की इसे बाहरी हवा लग गयी है झाड़–फूंक से ठीक हो जाएगी। गर्भवती की बिगड़ती हालत देख मितानिन ने ए.एन.एम. को फोन किया तो उसने तुरंत 102 को फोन कर गर्भवती को जिला अस्पताल ले जाने की सलाह दी। मितानिन ने 102 को बहुत बार फोन किया परन्तु उनका फोन नहीं लगा। मितानिन ने घर वालों को समझाया की जान जाने का डर है तो वे लोग शहीद अस्पताल ले जाने के लिए तैयार हुए। मितानिन ने निजी गाड़ी की और गर्भवती को शहीद अस्पताल ले गयी। गाड़ी में गर्भवती को दो बार झटका आया और अस्पताल पहुंचने के बाद 3 बार झटका आया। गर्भवती को भर्ती किया गया और रात के 9:30 बजे प्रसव पीड़ा शुरू हुयी। प्रसव पीड़ा के दौरान भी गर्भवती को झटका आ रहा था और वह बेहोश हो रही थी परन्तु डॉक्टरों के प्रयास से 10:30 बजे प्रसव हो गया। बच्चा 1 किलो 500 ग्राम का पैदा हुआ। मां और बच्चे को 13 दिन अस्पताल में भर्ती रखा गया और जब वे दोनों स्वस्थ हुए तो उन्हें छुट्टी दी गयी।

➡ **सीता साहू-मितानिन**

समिति के द्वारा लोगों के खाद्य सुरक्षा अधिकार पर किये जा रहे प्रयास

आंगनवाड़ी में बच्चों को मेनू अनुसार भोजन दिया जाना चाहिए

ग्राम-अमेठी, विकासखंड-गरियाबंद, जिला-गरियाबंद

गांव के ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के सदस्यों ने आंगनबाड़ी केंद्र में निगरानी की तो उन्हें यह पता चला की गांव के केंद्र में बच्चों को गर्म भोजन में ज्यादातर दाल या सब्जी या खिचड़ी दिया जा रहा था। समिति के सदस्यों ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका से बच्चों को मेनू के अनुसार खाना क्यों नहीं देते हो पूछे तो उन्होंने कल से देंगे बोल कर बात को टाल दिया। अगली समिति की बैठक तक भी बच्चों को मेनू अनुसार खाना नहीं दिया जा रहा था। समिति ने बैठक के दौरान विभाग को आवेदन देने का निर्णय लिया। समिति की बैठक में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका भी उपस्थित थे तो उन्होंने समिति के सदस्यों को आवेदन देने के लिए मना किया और दूसरे दिन से मेनू अनुसार खाना देने का वादा किया। समिति ने बाद में आंगनबाड़ी केंद्र की निगरानी में पाया की बच्चों को पूरा भोजन दिया जा रहा था।

➥ ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवम पोषण समिति-ग्राम अमेठी

खाद्य सुरक्षा एवं पोषण सुधार अभियान से कुपोषित बच्चों की पहचान व इलाज किया गया

विकासखंड-मैनपाट, जिला-सरगुजा

मैनपाट विकासखंड के कुल 415 गांवों में खाद्य सुरक्षा एवं पोषण सुधार अभियान किया गया। इस अभियान के तहत 0–3 वर्ष के कुल 2273 बच्चों का वजन किया गया। जिसमें से 1459 बच्चे सामान्य पाए गए एवं 491 बच्चे कुपोषित एवं 323 बच्चे गंभीर कुपोषित पाए गए। गंभीर कुपोषित बच्चों में से 13 बच्चों को मितानिन ने तुरंत पोषण पुनर्वास केंद्र में भर्ती करवाया गया एवं अन्य बच्चों के परिवार में बच्चों के खानपान पर निरंतर परिवार भ्रमण कर सलाह दी जा रही है। जिसमें खाने में तेल डालकर खिलाना, रेडी टू ईट, परिवार की आर्थिक स्थिति के अनुसार फल, दूध, अंडा और मांस, मछली खाने खिलाने की सलाह दी जा रही है। और नियमित निगरानी की जा रही है। मितानिनों के प्रयास से बच्चों के स्थिति में सुधार आ रहा है।

समिति ने गर्भवती को उसके हक का राशन दिलाया

ग्राम-गिनाबहार, विकासखंड-कुनकुरी, जिला-जशपुर

गांव में उस समय 5 गर्भवती महिलाएं थी जिनका पंजीयन आंगनबाड़ी केंद्र में हो गया था। इन पांच गर्भवती में से एक गर्भवती महिला अर्चना को रेडी टू ईट नहीं दिया जा रहा था। गांव में समिति की बैठक की गयी जिसमें गांव की सभी गर्भवती, शिशुवती माताओं को बुलाया गया। बैठक में वह गर्भवती महिला भी थी और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता भी। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ने समिति को बताया की गर्भवती महिला रेडी टू ईट लेने नहीं आती है तो उसने बताया कि मैं तो हर बार जाती हूं परन्तु आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ही उसे रेडी टू ईट नहीं देती है। आमने सामने बात होने से आंगनबाड़ी कार्यकर्ता की गलती सामने आ गयी। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ने अपनी गलती मानी और गर्भवती महिला को एक साथ पूरे 6 माह का रेडी टू ईट दे दिया।

समिति ने सुनिश्चित किया आंगनवाड़ी में गर्भवती महिलाओं को गर्म पका भोजन मिलना

ग्राम-गैंदाटोला, विकासखंड-छूरिया, जिला-राजनांदगांव

गांव में वी.एच.एन.डी के दिन गांव की सभी गर्भवती टीका लगवाने के लिए आयी थी तब ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के सदस्यों ने उनसे पूछा की आंगनबाड़ी केंद्र में दोपहर को भोजन करने जाते हो या नहीं। उपस्थित गर्भवतियों में कुछ ने नहीं कहा तो कुछ ने इस योजना की जानकारी ही नहीं है बताया। समिति के सदस्यों ने इस समस्या में सुधार लाने के लिए दूसरे दिन ही समिति की बैठक रखी जिसमें आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और गर्भवती माताओं एवं अन्य ग्रामीणों को भी बुलाया गया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता से पूछा गया की सभी गर्भवती माताओं को दोपहर का भोजन क्यों नहीं मिल रहा है ? आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ने बताया की हम तो सभी गर्भवती को बुलाते हैं पर वो लोग ही नहीं आते हैं। समिति के सदस्यों ने बताया की गांव में आज भी बहुत सी गर्भवती माताओं को इस योजना की जानकारी नहीं है क्योंकि आप लोगों के द्वारा प्रयास नहीं किया गया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने फिर सभी उपस्थित लोगों को योजना की जानकारी दी। दूसरे दिन से गांव की सभी गर्भवती माताएं आंगनबाड़ी में दोपहर का भोजन करने आने लगी।

कोरोना से बचाव व रोकथाम के लिए मितानिनों के द्वारा किये जा रहे प्रयास

राज्य के 146 विकासखंडों में मितानिनों द्वारा कोरोना से बचाव व रोकथाम के लिए अपने पारा में लोगों को जागरूक व सहयोग कर रही है। राज्य के सभी विकासखंडों से कुल 62523 मितानिनों का कोरोना पर प्रशिक्षण दिया गया।

फरवरी व मार्च माह में मितानिनों द्वारा निम्न प्रयास किये गये -

क्र.	मितानिनों द्वारा की गई गतिविधि	संख्या
1.	बैठकों में हाथ धोना सीखाया गया	46407
2.	इस विषय पर जानकारी देने हेतु परिवार भ्रमण	1493084
3.	परिवार में हाथ धोने का अभ्यास करवाया गया	1349904
4.	दीवार लेखन	152479

समिति ने रोज कमाने खाने वालों की पहचान कर उन्हें भोजन दिलाया
ग्राम-करंजी, विकासखंड-सूरजपुर, जिला-सूरजपुर

करंजी में बहुत से गरीब परिवार रहते हैं जो मजदूरी कर, ट्रेन में मांग कर एवं कुछ समान बेच कर अपना गुजारा करते थे। लॉकडाउन के कारण इन परिवारों का कमाने खाने का साधन खत्म हो गया था। गांव की पंचायत और ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के द्वारा इन परिवारों की मदद करने का निर्णय लिया गया। गांव में 28 परिवारों की पहचान की गयी जिनके पास राशन कार्ड नहीं था और कुछ परिवार ऐसे थे जिनके पास राशन कार्ड तो था परन्तु अन्य जरुरत की लिए पैसे नहीं थे। समिति के द्वारा इन सभी परिवारों 10–10 किलो चावल, 2–2 किलो दाल, आलू और धनिया, मिर्ची मसाला और 1–1 लीटर तेल दिया गया।

मितानिन ने बाईक एम्बुलेंस में गर्भवती को अस्पताल पहुंचा कर सुरक्षित प्रसव कराया
ग्राम-बोरंद, विकासखंड-नारायणपुर, जिला-नारायणपुर

लॉकडाउन के दौरान गांव की सोहंती बाई को प्रसव पीड़ा हुई। गांव की मितानिन ने सोहंती की पूरे गर्भकाल में उसकी देखभाल की थी। मितानिन को जैसे ही सोहंती की पीड़ा के बारे में पता चला उसने तुरंत एक एम्बुलेंस को बुलवाया और उसे बड़े जम्हारी के उप स्वास्थ्य केंद्र ले गयी। सोहंती का सामान्य प्रसव हुआ और उसने एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया।

➡ रैमो बाई-मितानिन

कोरोना के दौरान हाथ धुलाई -

कोरोना के दौरान राशन वितरण -

कोरोना के दौरान दिवाल लेखन -

समिति ने जरुरतमंदों की पहचान कर उनके लिए भोजन की व्यवस्था की
विकासखंड-बागबहरा, जिला-महासमुंद

गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक की गयी। बैठक में गांव के गरीब जरुरतमंदो की मदद के लिए सर्वे करना तय किया। समिति के द्वारा सर्वे कर गरीबों की सूची पंचायत को दी गयी परन्तु पंचायत द्वारा यह कहकर कोई मदद नहीं की गयी कि हमारे गांव में कोई गरीब नहीं है। समिति ने नोडल के माध्यम से एस.डी.एम. को वह सूची दी गयी परन्तु उन्होंने भी यह कहकर मना कर दिया कि आपके पंचायत से प्रस्ताव आया है की आपके गांव में कोई भी गरीब नही है। समिति ने दोबारा एस.डी.एम. से गुहार लगाई और उन्हें बताया कि ये परिवार को अगर भोजन नहीं दिया गया तो भूख से मरने की नौबत आ सकती है। एस.डी.एमं ने इस बार समिति की बात को गंभीरता से लिया और तुरंत सभी जनपद पंचातय के नोडल और सी.ई.ओ. की बैठक कर सभी ग्राम पंचायत में 20 परिवारों को राशन और सब्जी वितरण करने का निर्देश दिया। अब विकासखंड बागबाहरा के 111 पंचायत में 20–20 परिवारों को प्रत्येक सप्ताह में राशन और सब्जी का वितरण किया जा रहा है। समिति के द्वारा उन 20 परिवारों के अलावा भी गांव में अन्य जरूरतमंदो की पहचान कर समिति की और से राशन और सब्जी देकर सहयोग किया जा रहा है।

➡ जनक राम नायक-स्वस्थ पंचायत समन्वयक

खाद्य अधिकारी को फोन करने की धमकी पर राशन दूकान वाले ने राशन दिया
ग्राम-बागडूमर, विकासखंड-धमधा, जिला-दुर्ग

गांव के दो व्यक्तियों के पास खाने के लिए चावल नहीं था तो वे राशन दूकान गए। राशन दूकान वाले ने उन्हें कह दिया की वह अभी उन्हें चावल नहीं देगा। उन दोनों व्यक्तियों ने सचिव को फोन लगाया, सचिव ने एस.पी.एस. को बोला की वह राशन दुकान वाले से बात कर ले। एस.पी.एस. ने जाकर राशन दूकान वाले से बात की तो उसने कह दिया की अभी मेरा मार्च माह का राशन नहीं बटा है इसलिए मैं नहीं दूंगा। एस.पी.एस. ने राशन दुकान वाले को बताया की सरकार ने अभी 2 माह का राशन मुफ्त में देने के लिए आदेश दिया है तो भी राशन दुकान वाले ने कोई बात नहीं सुनी। एस.पी. एस. ने फिर उसे बोला की वह खाद्य अधिकारी को फोन कर रही है और एक मितानिन प्रशिक्षक को फोन लगा दिया। खाद्य अधिकारी को फोन लगा रहे हैं सोचकर राशन दुकान वाला डर गया और दूसरे दिन उन दोनों व्यक्तियों को बुलाकर चावल दे दिया।

➡ लिसी-स्वस्थ पंचायत समन्वयक

समिति के द्वारा मध्यान्ह भोजन में बच्चों को अंडा दिये जाने संबंधी प्रयास

सरकार के द्वारा बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और पोषण के लिए मध्यान्ह भोजन योजना में सप्ताह में दो दिन अंडा एवं जो बच्चे अंडा नहीं खाते हैं उन्हें दूध और केला दिये जाने का निर्णय लिया गया है। यह योजना गांव की शालाओं एवं आंगनवाड़ी में शुरू की गई है या नहीं इसकी जानकारी के लिए राज्य के सभी गांव की ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति एवं मितानिनों के द्वारा निम्न प्रयास किये गये हैं -

- प्रत्येक शाला और आंगनवाड़ी में सप्ताह में अंडा/दूध केला दिया जा रहा है या नहीं इसकी जानकारी बच्चों एवं शाला से ली गई।
- जिन शाला में इस योजना का पालन नहीं किया गया वहां सरकार के द्वारा जारी निर्देश प्रपत्र की एक प्रति दी गई।
- जिन गांव या विकासखंड की शालाओं में इस योजना का पालन नहीं किया जा रहा था वहां पर रैली निकाली गई।

मध्यान्ह भोजन में अंडे दिए जाने का आदेश दिखाने पर बच्चों को स्कूल में अंडा मिला

ग्राम पंचायत-फरहदा, विकासखंड-अकलतरा, जिला-जांजगीर चांपा

ग्राम पंचायत फरहदा में एक मिडिल स्कूल है जिसमें स्वयं सहायता समूह के द्वारा मध्यान्ह भोजन दिया जाता है। गांव में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में स्कूल में मध्यान्ह भोजन में अंडा दिए जाने के विषय पर चर्चा की गयी। जिसमें यह बताया गया की स्कूल में मेनू अनुसार भोजन दिया जाता है जिसमें हरा साग–सब्जी, दाल, चावल, आचार, पापड़ दिया जाता है। समिति ने तय किया की बैठक के बाद स्कूल निगरानी के लिए जाएंगे। समिति के सदस्य स्कूल में प्रधान पाठक और समूह से मिले और उनसे शासन की नयी योजना जिसमें मध्यान्ह भोजन में बच्चों को सप्ताह में दो बार अंडा दिया जाना है पर बात की गयी। समूह की महिलाओं और प्रधान पाठक के द्वारा अंडे के लिए बजट नहीं हो पाएगा कहा गया। उन्होंने बताया की उसी पैसे में राशन सब्जी और ईंधन पर खर्च किया जाता है। समिति के सदस्यों ने सरकार के द्वारा जो आदेश दिया गया है उसकी प्रति प्रधान पाठक को और समूह की महिलाओं को दिखाया गया तो वे मान गए। शुरू में वे बच्चों को आधा अंडा देते थे परन्तु एक सप्ताह बाद पूरा एक अंडा देना चालू कर दिए।

➥ ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति-ग्राम पंचायत फरहदा

मध्यान भोजन को लेकर मितानिनों की बैठक संपन्न

बरमकेला। ग्राम स्वास्थ्य समिति विकासखंड अंतर्गत दिनांक 13.02.2020 को मध्यान्ह भोजन के अंतर्गत अंडा वितरण को लेकर खंड शिक्षा अधिकारी बरमकेला प्रांगण में कार्यक्रम आयोजन किया गया जिसमें विकासखंड के मितानिन एवं सहायता समूह के सदस्य ग्राम स्वास्थ्य समिति के सदस्य उपस्थित हुए। इस अवसर पर उपस्थित अधिकारी जी एस भीतर खंड शिक्षा अधिकारी, प्रदीप कुमार इनसेना जिला समन्वयक कार्यक्रम, अरुण नवरंग, एच डी निषाद, मोहनी चौहान, सीमा राजपूत, श्रीमती मालाकार, वृंदा चौहान, एवं मितानिन के प्रशिक्षण श्रीमती जान्हवी, बसंती, रीता, नंदिनी, प्रभावती, बरमकेला विकासखंड में 363 स्कूलों में से 344 स्कूल में मध्यान्ह भोजन में अंडा वितरण किया जा रहा है और 19 स्कूल में अंडा शामिल नहीं करने के लिए कार्यालय से पत्राचार किया जाएगा। मितानिन कार्यक्रम द्वारा भी मध्यान भोजन एवं वितरण को लेकर निगरानी किया जाता है।

सार समाचार

मध्याह्न भोजन में अण्डा नहीं मिलने की शिकायत

सारंगढ़, 20 फरवरी (देशबन्धु)। आज सुबह स्थानीय विकासखण्ड शिक्षाधिकारी को वनांचल क्षेत्र के सैकड़ों ग्रामीणों जिनमें महिलाओं की संख्या अधिक है ने लिखित में शिकायत किया है कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत समस्त शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में सप्ताह में दो दिवस अण्डा तथा बच्चों के शाकाहारी होने या अन्य किसी भी प्रकार की स्थिति में दूध या अन्य समतुल्य आहार मध्याह्न भोजन योजना के तहत दिए जाने का प्रावधान है परन्तु इस योजना के निर्देशों का पालन ना करते हुए क्षेत्र के कई विद्यालयों में अण्डा या अन्य कोई समतुल्य आहार नहीं दिया जा रहा है। शिकायत पत्र पर कार्यवाही कर सम्बंधितों को शो काज नोटिस जारी करने के निर्देश बीईओ आर एन सिंह द्वारा बडे बाबू यादव को दिया गया है। अब देखना यह है कि इस मामले में आगे क्या कार्यवाही होती है।

मध्यान भोजन में बच्चों को अंडा देना अनिवार्य है

ग्राम-बनियागांव, विकासखंड-कोंडागांव, जिला-कोंडागांव

शाला में पढ़ने वाले बच्चों को मध्यान भोजन में सप्ताह में अनिवार्य रूप से दो दिन अंडा दिए जाने के शासन के आदेश पर गांव की ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के सदस्य बैठक के बाद गांव की शाला के प्रधान पाठक से चर्चा करने के लिए गए। शिक्षक ने समिति के सदस्यों से आदेश की प्रति दिखाने के लिए कहा तो समिति के सदस्यों ने आदेश की प्रति दिखा दी। शिक्षक ने कह दिया की हमारे पास कोई आदेश नहीं आया है। समिति के सदस्य शाला में मध्यान भोजन देने वाले समूह से मिले और उन्हें भोजन में अंडा देने के बारे में पूछा तो समूह वाले शिकायत करने लगे की पैसा समय पर नहीं देते हैं, कम पैसा देते हैं। समिति के सदस्यों ने उनसे कहा की अगर अंडा नहीं खिलाओगे तो लिखित में दे दो। समिति वाले बोले नहीं हम आज से ही अंडा खिलाना चालू कर देते हैं। उस दिन से बच्चों को शाला में सप्ताह में दो दिन मध्यान्ह भोजन में अंडा मिलना चालू हो गया।

➥ उर्मिला एवं लता-मितानिन प्रशिक्षक

राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य के अंतर्गत चयनित किशोरों में बाल सहयोगी के साथ में गांव, शहर, पारा बस्ती में बेहतर स्वास्थ्य, परिवार व समाज के प्रति व्यवहार कुशलता व जिम्मेदारी की क्षमता विकसित करने एक सकारात्मक पविर्तन के लिए तैयार किया जा रहा है।

किशोरों के साथ बेहतर स्वास्थ्य और समाज का निर्माण - राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित किशोरों को बाल सहयोगी के रूप में गांव, शहर, पारा बस्ती में बेहतर स्वास्थ्य, परिवार व समाज के प्रति व्यवहार कुशलता व जिम्मेदारी की क्षमता विकसित करने का एक प्रयास जनवरी 2020 से तैयार किया जा रहा है।

धमधा-दुर्ग

इस कार्यक्रम के अंतर्गत की जा रही प्रमुख गतिविधियां निम्न है –

बाल सहयोगियों का चयन - 146 विकासखंडो के माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक शालाओं में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के सदस्यों, मितानिनों एवं शाला के शिक्षकों के द्वारा 6 वीं से 12 वीं कक्षा में पढ़ने वाले 101431 विद्यार्थियों का चयन बाल सहयोगियों के रूप में किया गया है। इस कर्यक्रम में 6 वीं से 12 वीं की प्रत्येक कक्षा से 2–2 विद्यार्थियों को चुना गया है।

भाटापारा

चयनित बाल सहयोगियों की बैठक - चयनित बाल सहयोगियों की बैठक कर निम्न विषयों पर चर्चा किया जाना तय किया गया है –

- स्वास्थ्य से जुड़ी हुई बीमारियों जिसमें मलेरिया, दस्त, टी.बी., कुष्ठ, प्रजनन, कुपोषण आदि समस्याओं से संबंधित चुनौतियां
- तंबाखू और उससे बनी सामाग्रियों (गुटखा, गुड़ाखू आदि) के सेवन से होने वाली समस्या
- सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु
- लैंगिग भेदभाव

जनवरी व फरवरी माह में सभी विकासखंडों में चयनित बाल सहयोगीयों की कुल 11823 बैठकें की गयी जिसमें कुल 83507 बाल सहयोगियों ने भाग लिया। इन बैठकों में बाल सहयोगियों से तंबाखू के खतरों एवं सड़क दुर्घटना पर चर्चा की गयी और जानकरी दी गयी। चर्चा के बाद 2364 शालाओं में बाल सहयोगियों के द्वारा अपनी शाला के अन्य बच्चों के लिए तंबाखू पर नुक्कड़ नाटक करके दिखाया गया।

तोकापाल-बस्तर

पोड़ीउपरोड़ा-कोरबा

फिंगेश्वर-गरियाबंद

आरंग-रायपुर

कोरिया

कोंटा-सुकमा

साल्हेगोरी-लोरमी

धुआं रहित चूल्हा से गांव बन रहा है स्वस्थ और धुआं मुक्त

चूल्हे में खाना पकाने से उससे निकलने वाले धुएँ से महिलाओं को सांस, आँख, टी.बी. आदि की बीमारी से जूझना एक आम बात है। ऐसी ही समस्या से अनिता लकड़ा जूझ रही थी। अनिता पहाड़ों और जंगलो से घिरे सरगुजा जिले के लुण्ड्रा विकासखंड के लालमाटी पंचायत में रहती है। अनीता को साल भर के लिए घर में चूल्हा जलाने के लिए 3 माह तक जंगल से लकड़ी बीनकर लाना पड़ता था। अनिता बताती है कि चूल्हा जलाने से जो धुआं निकलता था उससे उसकी साँस फूलने लग जाती थी, आँखों में जलन होने लगती थी और बच्चों को भी बहुत खांसी आती थी। इतना ही नहीं उसकी रसोई और बर्तन भी काले पड़ जाते थे जिसकी वजह से उसे साल में कई बार रसोई की लिपाई करनी पड़ती थी। अनिता की तरह ही गाँव की अन्य महिलाएं भी चूल्हा से होने वाले धुएँ से परेशान थी परन्तु उनके पास इससे बचने का कोई रास्ता नहीं था।

मितानिन कार्यक्रम के अंतर्गत महिलाओं को होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं में खाना पकाने के दौरान और बाद में चूल्हे के धुएँ से होने वाली समस्या को पहचानते हुए इसके समाधान के लिए धुआं रहित चूल्हा के निर्माण का प्रयास की शुरूआत की गयी। लुंड्रा विकासखंड के स्वास्थ्य फुलवारी समन्वयक के द्वारा अनिता लकड़ा के घर सबसे पहले धुआं रहित चूल्हा का निर्माण किया गया। अनिता के घर में धुंआ रहित चूल्हा बनने के बाद अनिता बताती है कि केवल 200 रूपए में उसने अपने घर में धुआं रहित चूल्हा बनाया है। अब मेरे घर में धुआं नहीं भरता है, रसोई और बर्तन काला नहीं होता है और सबसे जरूरी बात अब लकड़ी कम लगती है खाना भी जल्दी बन जाता है उससे खांसी सर्दी भी नहीं होती है। जब आस-पड़ोस की महिलाओं ने अनिता के घर के ऊपर से धुआं रहित चूल्हे के पाईप से सुबह और शाम धुआं निकलता देखा तो सभी ने अनिता के घर का धुआं रहित चूल्हा देखा और उसके फायदे के बारे में अनीता से सुना। धुआं रहित चूल्हे से अनिता के जीवन में आए बदलाव की खबर पूरे गाँव और पूरे पंचायत में फैल गई।

गाँव के सरपंच ने भी जब धुआं रहित चूल्हे के लाभ के बारे में सुना तो उन्होंने फुलवारी समन्वयक से अनुरोध किया कि उन्हें और गाँव के लोगों को धुआं रहित चूल्हे के बारे में और जानकरी देवें। फुलवारी समन्वयक के द्वारा गाँव के लोगों को धुआं रहित चूल्हे के बारे में जानकरी देते हुए बताया गया कि धुआं रहित चूल्हा कम खर्च में बन जाता है। कम खर्च में भोजन और अपने घर के महिलाओं को धुएं से होने वाली स्वास्थ्य संबंधी बहुत सी बीमारियों जैसे टी.बी., निमोनिया, आंख की बीमारी आदि से बचाने का एक महत्वपूर्ण उपाय है। धुआं रहित चूल्हे से होने वाले लाभों को सुनने के बाद सरपंच और समिति के द्वारा गाँव के आंगनबाड़ी केंद्र में और लालमाटी पंचायत में कुल 56 घरों में धुआं रहित चूल्हा बनाया गया है। लालमाटी से धुआं रहित चूल्हे के सफल अनुभव और प्रयास के फलस्वरूप पहले सरगुजा जिले और फिर धीरे-धीरे पूरे छत्तीसगढ़ राज्य में इसे अपनाया जा रहा है। अब तक सरगुजा जिले में कुल 3885 और राज्य में कुल 19252 धुआं रहित चूल्हे बनाए जा चुके हैं।

➡ अनुपम यादव-स्वास्थ प्लस फुलवारी समन्वयक

दिवाल लेखन बना जागरूकता का एक सशक्त माध्यम

आज गांव की हर दीवालों पर स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और खाद्य सुरक्षा से संबंधित जागरूकता और अधिकार आधारित जानकारी कही चित्र तो कही रंग बिरंगे अक्षरों में गांव के मुख्य स्थानों में लिखी हुई दिखाई पड़ती है। गांव के ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के द्वारा लोगों को जागरूक करने के लिए दिवाल लेखन को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया जाता रहा है। इसी का एक नया रूप है ग्राम स्वास्थ्य समिति की स्वास्थ्य दिवाल। स्वास्थ्य दिवाल में तीन तरह की जानकरी लिखी जाती है -

1	2	3
समिति के पदाधिकारी संबंधी पूरी जानकारी	स्वास्थ्य संदेश - दिवाल का यह हिस्सा ब्लैक बोर्ड का होता है जिसमें समय-समय पर चाक से जानकारी लिखी और मिटाई जा सके। इसमें स्वास्थ्य संबंधी कोई भी संदेश जैसे वर्तमान में करोना से बचाव के लिए किये जाने वाले कार्य की जानकारी लिखी गयी है। इसके अतिरिक्त शासन की योजना संबंधी जानकरी भी लिखी जाती है।	समिति के मुख्य कार्य व जिम्मेदारियों की जानकारी